

मराठी

काव्य-

ज्ञान

५१६.१५१३६

इ. वि. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

लिखित ग्रंथ संग्रह :—

५१६.१५१३६ (१३६)

हरिपाठाचें अभंग.

विषय मराठी काव्य.

(1) 9

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

हाचि ये दारिद्र्याद्वृणभारिगतेने
मुक्तीच्यारिः साधीये ज्या ॥ १ ॥
हारिमुखे मृणा हारिमुखे मृ
णा पुण्याचि गणना को नवारि
आ सोनि ससि डि के वेग वारि
व्येदरा स्यात् साद्वि सदा ॥ ३ ॥
ना नये वंसा साचि ये स्वणे
दारवे चैरा इवाचारि ॥ ५ ॥
चहवेदि ज्ञान साहसा साकारणः
आठ राही पुराण हारि सि गति ॥ ७ ॥
मंथोनि न वनिता ते सेद्ये आनंता ॥
वाया व्यर्थ कथा सांडि मारी ॥ ९ ॥
ये वृहदि आत्मा डिवरि विसमा
ण ॥ वाया तु दुर्गमानं द्या लि प्रन

॥ न देवा पाठ हरि हा वैकुण्ठ ॥ अर
॥ जो घन दाट हो ही दिशा ॥ मार
॥ त्रिगुण आसार निर्गुण हे सार ॥
॥ सारा सार विच्यार हारि पाठ ॥
॥ निर्गुण सगुण गुणाचे अवगु
॥ ण ॥ हारि विना जन व्यर्थ जाणा ॥ र
॥ आव्यक्त नि नाहि त्या आ
॥ कार ॥ जे पुं राया सि भजे
॥ स्नान देवा धरा मंदिर म
॥ नी ॥ अनंत पुढ प्य तरि च
॥ लिये ॥ १ ॥ ३ ॥ भावे विण की भक्ती
॥ न मुक्ति ॥ बळे विण रा कि बोलेन
॥ १ ॥ १ ॥ वैसे निदेंवत प्रसन्न हरि
॥ खु गाराहे नि कांत सी ना सि वाय
॥ पुडे ती हि रे आह पा ठ ६

(3)

धुबोधजा। गतो निरोनियाठे।
ठा ६ य मुरास अनुभव वि॥ १॥ का पुरा
चीवा लिउ ज ज ति दि हि म रा ६ य॥
स मा ली जा। गी जे सि॥ २॥ प्रो क्षरे
म खे आ। अ भ्रा ग्ये वि न ठ। ग। सा धु
या अं वि। ग। ह रि त के॥ ३॥ क्षा न
दे व मी र खे। उ ड नी ह रि ज
नी व नी आ। प र्व ता
प्र मा के पा त व। व ज जे प हो
णे आ भ ट क। जा हि ड्या स्त्री
भ की तो प लि त आ भ त ग। ह रि सि न
भ ड त दे व ह ल ग र। अ नं त वा चा क
वर ज लि ब र क ग त या वे से नि द या क
मा वे ह रि॥ ३॥ क्षा न दे वा प्र मा ण
ओ ह मा हा नि धा न॥ स यी डि वा र
पु र्ण ये क नो दो मा गे



(५)
 सायास करि सी प्रपंच्य दी न नि
 हारि सि न न सि क ब न्या गु ने ॥३॥
 ज्ञान देव फुले हारि डोप करणे ॥
 तुळ नि धर ने प्रप च्या चे ॥१॥ ॥२॥
 योग याग विधी ये ने न क सि द्धि
 ॥१॥ क नि च उ क ॥ ॥१॥ ध र्म ॥१॥
 ॥१॥ आवे वि ण दे ॥ ॥१॥ स ण्दे ह ॥ गु ॥
 ॥१॥ रु वि ण आ ॥ ॥१॥ के सा क ले ॥ ॥२॥
 ॥१॥ त पे वि ण दे व ता ॥ ॥१॥ त्या वि ण ॥
 ॥१॥ प्रा ण ॥ ॥१॥ रु रु वि ण हि त को ण सां ॥
 ॥१॥ ने ॥३॥ ॥१॥ ज्ञा न दे वा शां त या द्र ॥
 ॥१॥ छं ति प्रा ता सा धुं चा सां गा ति
 ॥१॥ त रु णो पा ये ॥ ॥१॥ ॥२॥

(5)

मृण आनी मेले सं प्रसजाले ।
तैसे ना मिकेले अपता हारी ॥ १ ॥ हारी
उच्यारणि प्रवचे अगाध ॥ पले भु
त बाधानि उनि या ॥ ३ ॥ इहान देव
मृणे हरि माझा समर्थ ॥ न करचे अ
थ उपनिषदाग ॥ १ ॥ मलित्य
ते नेमना वे ॥ पद्मी ॥ वा या ॥
ची उपधि ॥ डेणा ॥ भाव
बळे आकळे ॥ वे नाकळे ॥ कर
तळे आवडते ॥ हारी ॥ २ ॥ पार
॥ इह चार वाधे ता भु मिवरि ॥ यत् ॥
॥ परोपरी साधे तैसे ॥ ३ ॥ इहान देव
॥ मृणे निवृत्ति निधान ॥ दिधु ॥ सु
॥ पूर्ण माझे हा लि ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥
॥ हरि चि स मे सुखे विण ॥ न साधे ॥

त जाणवैल बुद्धी गणव बुद्धी चै ॥
वैभव आन ना हि दुजे ॥ ये का ॥
कैरा वराजे सकल सिद्धि ॥ ५ ॥
सिद्धि निधी आव ची च ते पा ॥
धी ग जव परमानंदि प्र न ना ही ॥ ३ ॥
ज्ञान देवा रसा रस प्राधान ॥
हरि चै चै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
निस सस स ॥ हरि पाठ्या सि ॥
कलिका जहा न पाहे द्विष्टी ॥ ॥ ॥
समक्ष मते च्यारहे अनंतर सी ॥
तप पापा चे कलप पल ति पुठे ॥ ॥
हरि हरि हरी मंत्र जपा हारि वाचा ॥
कृणति जे वाचा तया मोक्ष ॥ ३ ॥



(३)

संता-चैसंगतिप्रनोमाना गैगति ॥
आकलावाशीपलियेनेपुंथे ॥ १ ॥
समद्वयवाचाभावहृषीवाचा ॥
आलाओसिवाचाराप्रद्वय ॥ २ ॥
कतलनाप्रसाधीलिसाधण ॥ ३ ॥
चेबंधननवाधीले ॥ ४ ॥
मोडिवैद्यकाका ॥ ५ ॥
मधुसीपीपण ॥ ६ ॥
रप्रव्हादले ॥ ७ ॥
निधयजात ॥ ८ ॥
नामहेसु ॥ ९ ॥
रुपपापय ॥ १० ॥
यर्थसाचेपान ॥ ११ ॥
आयेनाही ॥ १२ ॥
पोनेणेअद्वैतवादाः ॥ १३ ॥
पैछेकैसेनिहाये ॥ १४ ॥
निगुरुविज्ञान ॥ १५ ॥



(४)
 न घेउउ ना मी ॥ ३ ॥ सा न देव ह
 स गुण हिया न ॥ ना मा पाटी मो न्य
 प्र पंच्या चे ॥ १ ॥ १९ ॥ त्रिविधि संग
 मि ना ना ति र्ये ना मी ॥ चित्त ना
 ही ना मी आ न घे अर्थ ॥ १ ॥ ना
 मा सी की नुर ॥ पा पिया गह कि
 नि न घे व ॥ को न्ही ग्या
 पु रा न प्र की ॥ सी उ ना उ मी ॥
 का ॥ ना प्र ति न्हा ॥ को क उ दूर ति ॥ ३ ॥
 सा न देव ह ने ना प्र ज पा हारि चे ॥
 पं रे पं रा सा चे कु ल शु ध ॥ १ ॥ १० ॥
 हरि उ च्या न न अनंत पा प रा सि ॥
 आ ति त त या सि धु न प्र ति ॥ १ ॥



क्षानदेवमुने नारायणनामप्रभा
 यिडेउत्तमनिष्पत्त्यान॥२॥॥॥
 एकनामहरिदेतनामदुरि॥आदेत॥
 सुसखिविराज्याने॥१॥समबुद्धिद्यो
 तासमानश्रीहरि॥रामदनादीव
 मरिहरिआता॥२॥सर्वाजहिराम
 मदेहादेहियेन॥सर्पप्रकाराकस
 मरुस्तरसी॥३॥देवाचितिह
 रिचाठनेम॥सीयाजनामु
 मकजाता॥४॥हरिमुखीजप
 तेनरदुर्त॥५॥वासीसुत॥
 रामदरजा॥६॥रामछजनामीउना
 निसाधी॥७॥तयासीगाधतिसक
 ॥८॥सीद्धि॥२॥सिद्धिबुद्धिधर्महा
 रिपाठिआताप्रपंचिनिवासेसा
 ॥९॥संगे॥३॥क्षानदेवानामप्रकराम
 ॥१०॥संगे॥३॥क्षानदेवानामप्रकराम



Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the
 Ashwavan Chavan Pratishthan, Mumbai
 Digitized by eGangotri

हरिपाठ किंति सुखे अरिगाये ॥ ५ ॥
वित्रचि होये देहे हाचा ॥ १ ॥ तपा
चे सा मर्थ्य तपि न आमुप ॥ तो
धिर डि वक्र ज्यो वे कुंठी नो दे ॥ २ ॥
प्रीत माता पिता स्व सो न अपार ॥
चतुर्भुज नर हो वो निरा हाति ॥ ३ ॥
शान गुढ मया न देवा आ धी ॥
ते ॥ निर्वर्त्त ॥ तज मा से हो ॥
॥ ति ॥ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
नाम सं किर्त्त ॥ रवि ण स जो न ॥
ने ने का हि ॥ १ ॥ तं या न रा आ ध ले ॥
वे कुठ जो ड ले ॥ सकल हि च ड ले ति ॥
॥ थो ठ न ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
ते थे मु क ॥ १ ॥ हरि पा ठी स्त्री रा व ॥ १ ॥
तो ची ध न्य ॥ ३ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
नामा चि जो डि ॥ रा म दू द म अ ॥
॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Rajawade Sanshodhan Mandal, Mumbai.

नेदरास्त्रपुराणमृतिचेवचण॥ वे॥
कनारायेणसारजपि॥१॥ उपतप
हर्मह॥ रिविणधर्म॥ वाउगाचिने
नव्यथजाये॥२॥ हरीपाठीनेतेते॥
नेवांतसाहिहे॥ नर्ममरमंतडेसुम
नकलीके॥३॥ इपानदेविमंत्रहरि
नामाचेरास्त्र॥ नेनेकुळगोत्रव
मर्जियेते॥४॥ रामसंकिर्त
मणवेदनया॥ ५॥ पापेअंन॥
॥ तकोठीगे॥ ६॥ अंनला॥
॥ जन्माचेतप॥ ७॥ धरिमागि
॥ सुगमहरिपाठ॥ ८॥ योगयागकी॥
॥ याधर्माधर्ममाया॥ तेगेवि॥
॥ ३॥ याहरिपाठ॥ ९॥ इपानदेवि॥
॥ १०॥ योगकीयाधर्म॥ हरिवणन
॥ ११॥ नाहिदुजा॥ १२॥ का
॥ १३॥ नमउच्यारनिनाहि॥ दोर्क



922

रासधर्मनाममाहा दोवाहा
रण॥ अउजिवातारणहरीयेक॥
नामधर्महरीजीकायानामा॥ च॥
उपमायादैवाचिकोणबाणी॥
क्षानदेवासंगजालुहारिपाठ॥
पुर्वजवैकुण्ठशार्ङ्गसोपा॥ २॥
नित्येनेमनामिन्द्राणिदुष्कर्त॥
भ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥
गवलि॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥
मजोउच्यानि॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥
रिचरित्याच्या॥ २॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥
मन्त्रनर्कतोचीजाणा॥ येमाचा॥
पाहुणाप्राणिहोये॥ ३॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥
वपुसेनिवृत्तीसीयाडा॥ गगन॥
हुनिवाठनामआहे॥ ४॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥

(132)

जा निवने निवन्त्र गवन्ति नाहि ॥
१- च्या रोणि पाहि जो दृष्ट दा ॥ १ ॥
नारायेणं हरि उ- च्यार नामा- व
ने थैक जीका वा- चारि घनाहि ॥
जे थील प्रमाण ने न वे वे दा सि ॥
१- जिव जं तुमि न वे के ॥ ३ ॥ सा
१- देवा पं ॥ नि पाठ ॥ स ॥
१- जी वैकुंठ ॥ आ से ॥ म ॥
१- येक त ह ना ॥ ग रि म ना ग हा म
१- रि सी करुणा ये ॥ इ तु जि ॥ १ ॥ ते
१- ता म सो पे रे रा म द्ध म गो वि द्वा वा
१- ति स द्ध द्वा पा आ धी ॥ १ ॥ ना
१- ता प र ते त ह ना हि रि अं न्य था ॥
१- या आ णी का पं था जा स स्त जी
॥ ३ ॥

सातपाचलिनदराकाचामेष्टा ॥
 येकतदिकळादाविहादिग ॥
 तैसेनोकेनाप्रसर्वमागव ॥
 रिखयेथेकाहिकळन(उ)गति ॥
 आजपाजपणेउ(उठ)प्राणाचा ॥
 तेथेलोप्रनाचानिर्धारआसे ॥
 मशानदेवाडे ॥ १ ॥ विणव्यथ ॥
 मराप्रदक्षी ॥ २ ॥ मिये(ना) ॥
 मजपतपक ॥ ३ ॥ नेमधर्मास ॥
 मवीघटीसम ॥ ४ ॥ सिद्धी ॥
 ॥ नसोडितुभावकाकिरेसंदेहे ॥ रा ॥
 ॥ मच्छमिठाहोफोडिसदा ॥ २ ॥ जा ॥
 ॥ लिवितगोतकुळसिळप्रात ॥ १ ॥
 ॥ जेकातरीतभावणायुक्त ॥ ३ ॥
 ॥ मशानदेवध्यानिरामच्छमनि ॥
 ॥ जेवेकुठभुवणिघरके ॥ ३ ॥ ॥ २ ॥

157

श्यामदेवमो निजपमाह्यअंत
हृदयरोनिश्रीहुरिजपेसदा
सर्वसुखगोडिसर्वरास्यनिवाडि
रेकाभाअर्धघडिराहनको
इठिकावेकारसर्विसंसास
नायावेरसावपणगाणा
मंगलपवंलिहपाप
हरिनामिसंकुशिराही
अनिजदृष्टीकाहिसर्वमाया
मोडीरुद्रियासावडितपुनको
मालिथदुभावनभावधरि
हर्षोभातिदयापाहुणहुरिका
श्यामदेवप्रमाणणीदता
श्यामसमाद्रीसंजी



Project of Dr. Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

जीवणी हरिपाठ ॥ श्रीगुरुभ
इती श्रीहरिपाठसमुंर्ण
स्तु ॥ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५



ति

॥१०॥

(७)

॥ जन्म वित्त गोत्र कुल शील मात भजेका खरीत भाव युक्त ॥१॥ ~~ह~~ ज्ञान देव ॥
॥ ध्यानी राम कृष्ण मनी तेणें वेकुंठ भुवनी घर केले ॥२॥ जाणीव नेणिव भगवं ॥
॥ लीं नाही उधार नि पाहीं मोक्ष दया ॥३॥ नारायण हरी उधार नामाचा तें ॥
॥ येकळी काळाचारि घनाही ॥४॥ नथील प्रमाण नेणवे वेदासी ॥
॥ ते जीव जलुरीं काय केले ॥५॥ देवाकठ नारायण पाठ सर्व ग्रीवें ॥
॥ कुंठ भरला जरे ॥६॥ एक लक्ष पाठ उधरीं मना हरी सी करुणा येईला ॥
॥ लुझी ॥७॥ ते नाम रेणोपरे राम कृष्ण गोविंद जाचेसी स ह्रु जपा आधी ॥८॥ २७ ॥
॥ नामा परते तत्व नाही रे अन्यथा वांया जाणिक पंथा जासे झणी ॥९॥
॥ ज्ञान देव मोनी जपमाळा अंतरी रोनि श्री हरी जपे सदा ॥१०॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com